

Official Periodical of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

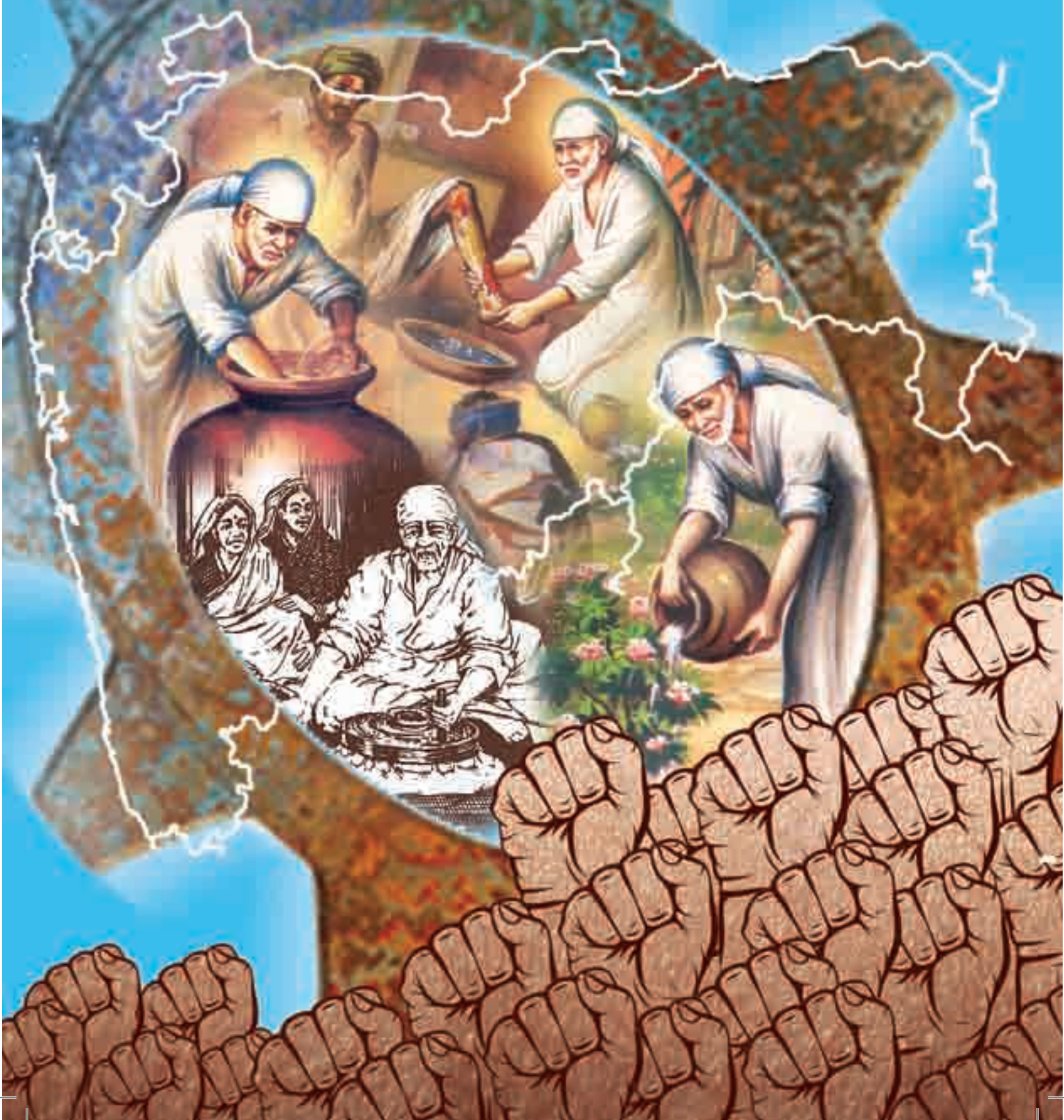
श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साई लीला

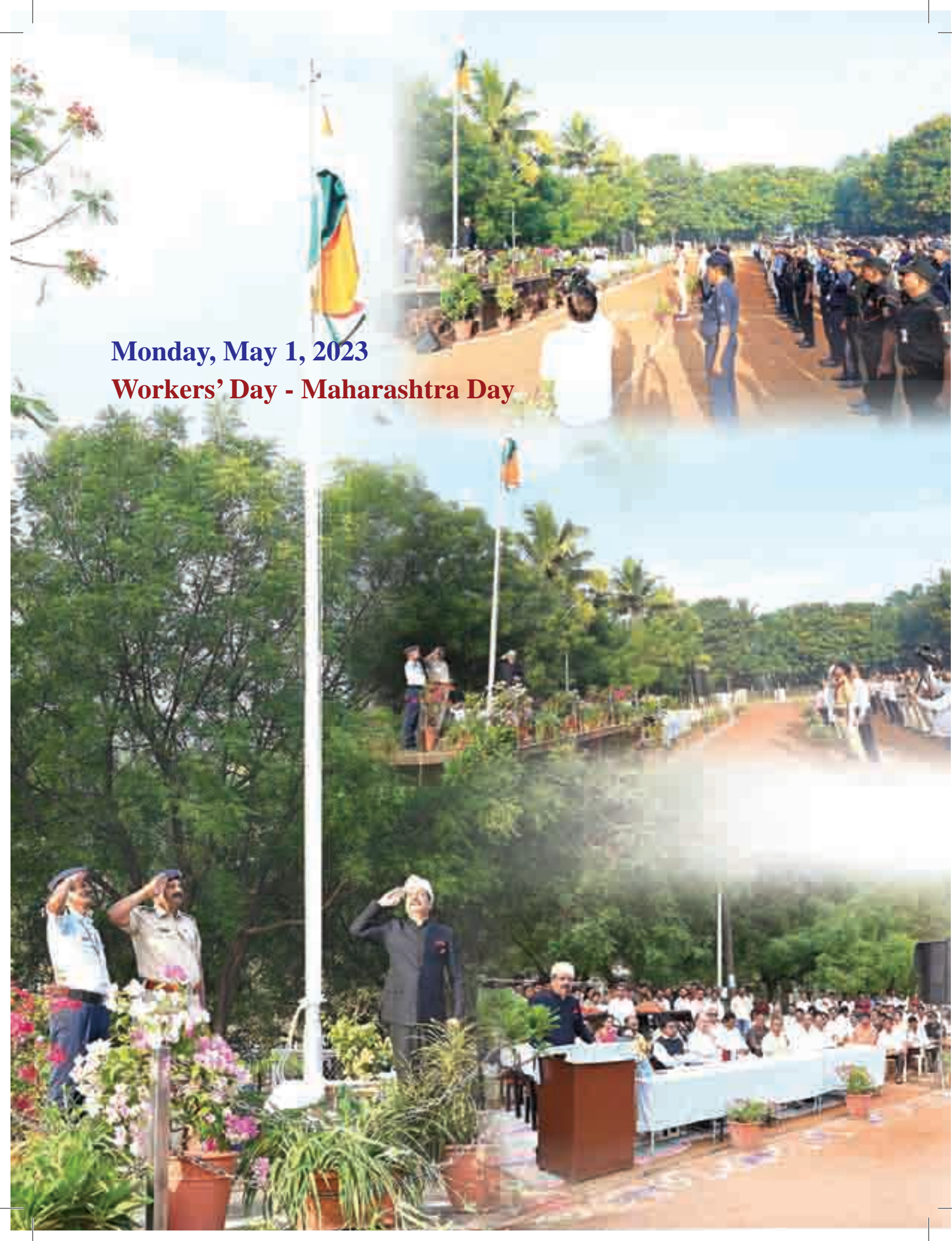
* Year 23 * Issue 3 * May - June 2023 * ₹ 15/-

* वर्ष २३ * अंक ३ * मई-जून २०२३ * ₹ १५/-



Monday, May 1, 2023

Workers' Day - Maharashtra Day



SHRI SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Hon'ble Members of Ad-hoc Committee



Shri Sudhakar Yarlagadda
(Chairman)
Principal District & Sessions Judge,
Ahmednagar



Shri Siddharam Salimath (IAS)
(Member)
District Collector, Ahmednagar



Shri P. Siva Sankar (IAS)
(Chief Executive Officer)

Internet Edition - URL: <http://www.shrisaibabasansthan.org>

श्री साईं लीला

वर्ष २३ अंक ३

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी
कार्यकारी सम्पादक : भगवान दातार

SHRI SAI LEELA

Year 23 Issue 3

Editor : Chief Executive Officer
Executive Editor : Bhagwan Datar

अंतरंग

- | | |
|---|----|
| ❖ श्री साईं सत्चरित्र मेरा पारायण? मेरा आचरण? : डॉ. सुबोध अग्रवाल | ४ |
| ❖ Shirdi News | 14 |
| ❖ Shri Ram Navami Festival - 2023 | 21 |

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting**: Computer Section, Mumbai Office, Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office**: 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar (East), Mumbai - 400 014. Tel.: (022) 24150798 E-mail: saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office**: At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel.: (02423) 258500 Fax: (02423) 258770 E-mail: 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription: Rs. 125/-** ● **Subscription for Life: Rs. 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers: Rs. 1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue: Rs. 15/-** ● **Shri Sai Punyatithi Annual Special Issue: Rs. 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Printrade Issues (I) Pvt. Ltd., 17, Pragati Ind. Estate, 316, N.M. Joshi Marg, Mumbai - 400 011 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

श्री साईं सत्चरित्र

मेरा पारायण ? मेरा आचरण ?

हे साईं! वह वर्ष १९८५ था - मेरे जीवन का सर्वाधिक स्वर्णिम काल, जब मेरे माता-पिता अपनी प्रथम शिर्डी यात्रा से लौट कर देहरादून आये थे। वे मेरे लिए दो बहुमूल्य उपहार लाए थे : पहला - आपके द्वारा भेजा गया मुझे शिर्डी आने का बुलावा और दूसरा - श्री हेमाडपंत जी द्वारा विरचित आपके अनमोल जीवन वृत्तान्त श्री साईं सत्चरित्र की एक प्रति।

हे ब्रह्माण्डनायक! मुझे आज भी भली भाँति स्मरण है कि पिता जी ने मुझे आपके बुलावे का अविलम्ब ही अनुपालन करने का आदेश दिया था और यह भी कहा

था कि श्री साईं सत्चरित्र के एक अध्याय का पारायण प्रतिदिन ही किया करो।

हे बाबा! आप जानते ही हैं कि मैं उसी वर्ष अपनी पत्नी उषा एवं पाँच वर्षीय बेटी विभूति को साथ लेकर शिर्डी आया था। हम तीनों ने ही समाधि मंदिर में आपके चरणों में साष्टांग प्रणाम किया था। और, वाह! तुरन्त ही यह क्या चमत्कार हो गया था... ३५ वर्षों से बंजर पड़े मेरे जीवन में सहसा ही एक नूतन भक्ति-प्रवाह होने लगा और उसका प्रतिफल यह हुआ कि उसी क्षण से आप मुझे अपनी दिव्य लीलाओं की आध्यात्मिक झाकियाँ निरन्तर दर्शाने लगे और मैं इन झाकियों की झलकियाँ बरसों से आपके भक्तों को श्री साईं लीला पत्रिका के माध्यम से



दिखलाता रहा हूँ।

हे शिर्डीश्वर! आपकी चरण रज को अपने मस्तक पर धारण कर, अहंकार शून्य बने रहने का प्रयत्न करते हुए मैं आपके भक्तों के समक्ष निवेदन करता हूँ कि अपने पिता के द्वितीय आदेश का क्रियान्वयन करते हुए विगत ३८ वर्षों से प्रतिदिन श्री साईं सत्चरित्र के एक अध्याय का पारायण करता आया हूँ।

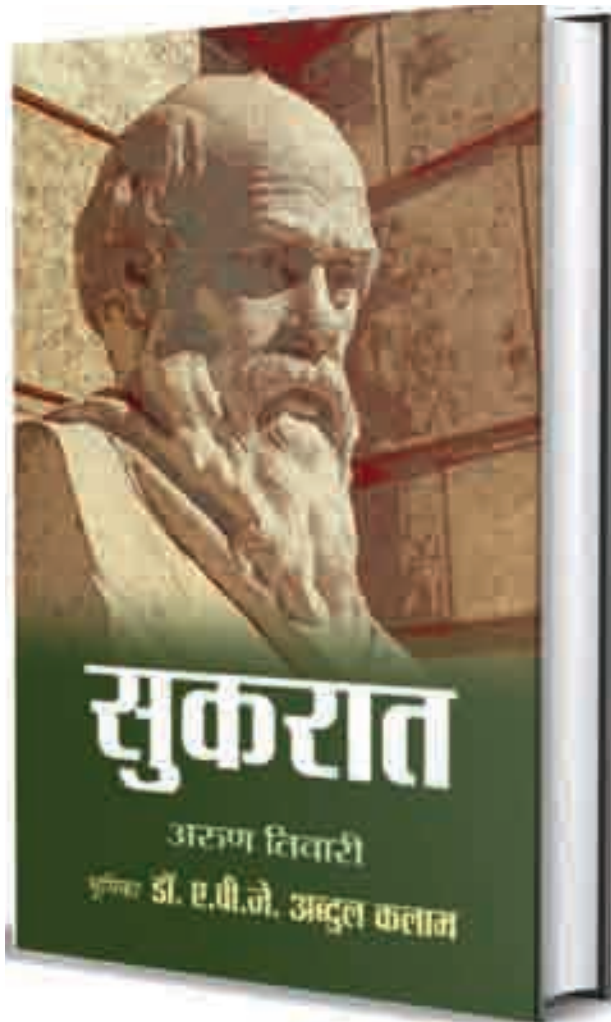
हे अनन्त रमणीय साईं! आज जब मैं श्री साईं सत्चरित्र का पारायण कर रहा था, तब मेरी दृष्टि अनायास ही अध्याय २१ में अंकित आपके उन वचनों पर जा टिकी जो आपने रेवेन्यू विभाग के एक कर्मचारी श्री वी.एच. ठाकुर

से तब कहे थे जब वे आपके दर्शनार्थ शिर्डी आए थे -

“जो तुम पठन करते हो, उसको आचरण में भी लाओ; अन्यथा उसका उपयोग ही क्या?”

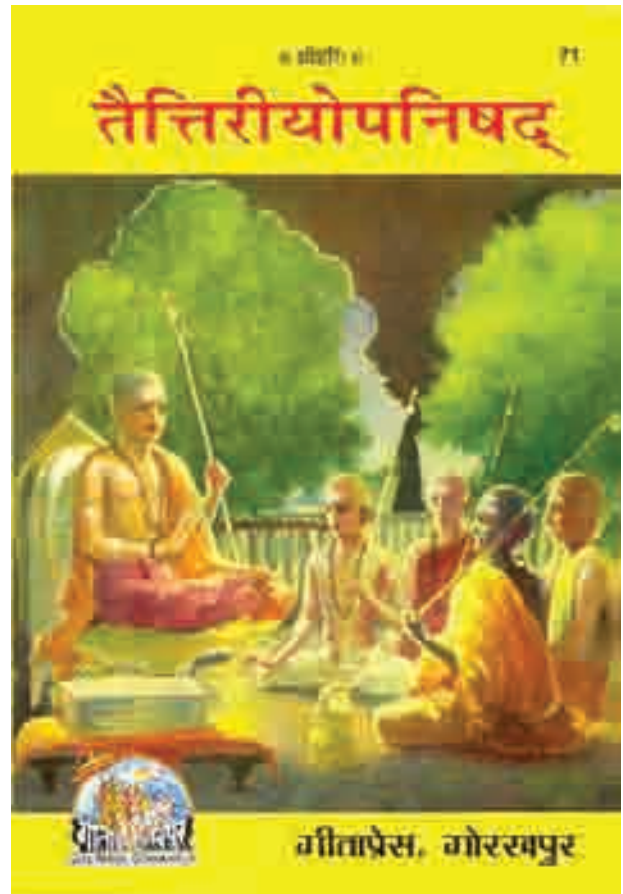
हे साईं! मैं आपके समक्ष शपथ पूर्वक कह रहा हूँ कि आपके उक्त वचनों को सुन कर मुझे लगा कि आपने जो कुछ भी श्री ठाकुर से कहा था, मानों वह मुझे ही लक्ष्य करके कहा गया था। मुझे लगा कि आप मुझे प्रत्यक्ष आदेश दे रहे हैं कि अब मेरे लिए यह विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने का समय आ गया है कि मैंने जो कुछ भी विगत ३८ वर्षों में श्री साईं सत्चरित्र में पढ़ा है, क्या मैं उसे अपने आचरण एवं व्यवहार में भी लाया हूँ।

हे साईं! आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है; मगर यह सुबोध आपसे एक अबोध शिशु सम हठ पूर्वक यह विनम्र अनुरोध कर रहा है कि जब तक यह मूल्यांकन कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता, तब तक आपको मेरी इस लेखनी



पर अपना अविरल आसन जमाए रखना होगा, यह जाँचते-परखते रहने के लिए कि कहीं स्व-मूल्यांकन करते समय आपका यह भावुक बालक कुछ घटाव-बढ़ाव तो नहीं कर रहा!

स्वतः सिद्ध होकर भी साधकों के समान आचरण करने वाले हे मेरे साईं! अब मैं महान यूनानी दार्शनिक सुकरात की सूक्ति - “खुद को जानिए” (Know Thyself) में ध्यानस्थ होकर स्व-मूल्यांकन की प्रक्रिया प्रारम्भ करता हूँ। ‘स्वात्मानं जानीहि’ का प्रारंभिक छोर

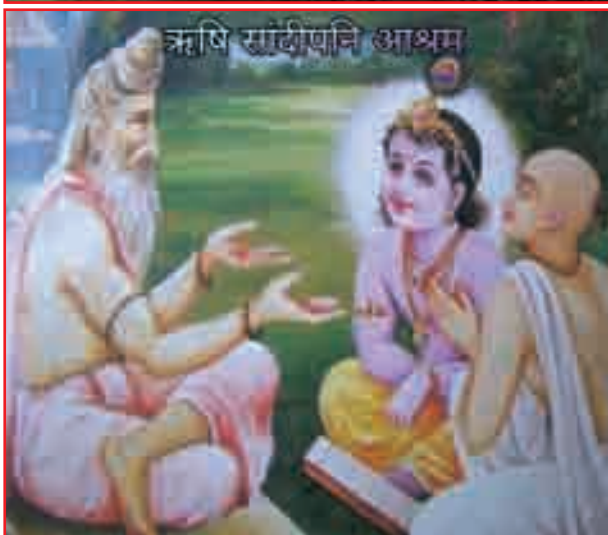


कहाँ से पकड़ूँ - यह समझने में स्वयं को सर्वथा असमर्थ पा रहा हूँ। अतएव श्री साई सत्चरित्र का जो भी अध्याय स्वतः ही खुल जायगा, उसी बिंदु से स्वयं को ढूँढ़ने का प्रयत्न करूँगा।

हे साई! श्री साई सत्चरित्र का अध्याय ३२ खुल रहा है; यहाँ तैत्तिरीय उपनिषद् से उद्धृत करते हुए कुछ शब्द यों लिखे हैं -

“हमें माता, पिता तथा गुरु का आदर सहित पूजन कर धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। ये चित्त-शुद्धि के मार्ग हैं और जब तक चित्त की शुद्धि नहीं होती, तब तक आत्मानुभूति की आशा व्यर्थ है।”

हे शिर्डीश्वर! यह सर्वविदित ही है कि राम और



कृष्ण दोनों ही महान अवतारी थे। मगर, आत्मानुभूति के लिए राम को अपने गुरु वशिष्ठ और कृष्ण को अपने गुरु सांदिपनि की शरण में जाना पड़ा था।

- श्री साई सत्चरित्र, अध्याय २

हे विराट! हे विश्वदेव! हे साई! श्री साई सत्चरित्र (अध्याय २१) में मैंने नवधा भक्ति यानि नौ प्रकार की भक्ति के बारे में पढ़ा है - यथा

१. श्रवण, २. कीर्तन, ३. स्मरण, ४. पादसेवन, ५. अर्चन, ६. वंदन, ७. दास्य, ८. सख्य और ९. आत्मनिवेदन।

हे बाबा! आप ही के कथनानुसार, इन नौ प्रकार की भक्ति में से यदि एक को भी सत्यता से कार्यरूप में लाया जाए तो भगवान् श्रीहरि अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्त की अभिलाषा पूर्ण करते हैं। हे देवा! मैं आज शुद्ध अंतःकरण से 'स्मरण भक्ति' कार्यरूप में लाने का अभ्यास करता हूँ। वस्तुतः मन को शुद्ध सात्त्विक विचारों से परिपूर्ण कर गुरुजनों एवं माता-पिता के रूप, लीलाओं और उपकारों आदि का स्मरण करना 'स्मरण भक्ति' है - यह सर्वविदित ही है और आज जब मुझे अपने मन-मंदिर में प्रतिध्वनित होने वाली श्री साई सत्चरित्र की घंटी रूपी ओवियों की गूँज सुनाई पड़ रही है, मैं उसी 'स्मरण भक्ति' में लीन होने की चेष्टा कर रहा हूँ - इस आकांक्षा को अपने हृदय में संजोए रखते हुए कि आत्मानुभूति के देदीप्यमान आलोक का मुझे भी तनिक सा दर्शन हो जाए।

हे साई! मेरा यह परम सौभाग्य रहा है कि मुझे महान शिक्षाविदों के पावन चरणों में बैठ कर शिक्षा प्राप्त करने



का सुअवसर प्राप्त होता रहा है। डॉ. पी.एन. मुखर्जी, डॉ. टी.आर. शर्मा और डॉ. के.पी. नौटियाल - ये तीन ऐसी दिव्य विभूतियाँ हैं जिन्होंने मुझे जैसे साधारण प्राणी को अपने शिष्य के रूप में अंगीकार किया। आज भी जब-जब मैं लक्ष्य-विहीन होता हूँ, मेरे ये गुरुजन स्वर्ग में विराजमान रहते हुए भी मुझे लक्ष्यबद्ध कर देते हैं। मेरा रोम-रोम इनका कृतज्ञ है। मैं इन गुरुत्रय को साक्षात् त्रिदेव (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) ही मानता हूँ और इनकी नित्य चरण वंदना करता हूँ -



गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवै नमः॥

और, जब मेरे ये त्रिदेव एकीकृत हो भगवान् दत्तात्रेय के रूप में प्रकट हो मुझे दर्शन देते हैं, तब मैं महर्षि नारद द्वारा विरचित 'दत्तात्रेय स्तोत्र' के कुछ अंश गुनगुनाने लगता हूँ - **यज्ञ भोक्ते च यज्ञाय यज्ञरूपधराय च।**

यज्ञप्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते॥

आदौ ब्रह्मा मध्य विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः।

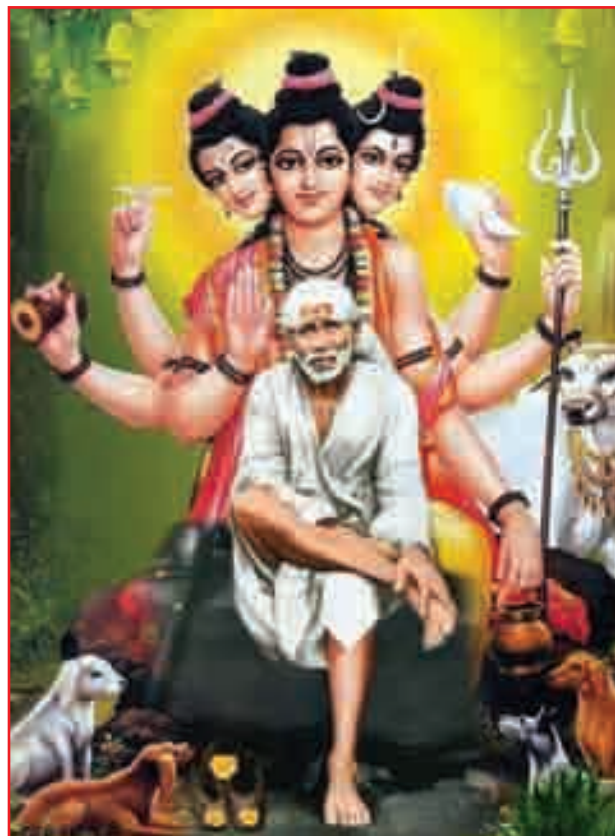
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तुते॥

अर्थात् : यज्ञ के भोक्ता, यज्ञ-विग्रह और यज्ञ-स्वरूप को धारण करने वाले, यज्ञ से प्रसन्न होने वाले, सिद्धरूप आप दत्तात्रेय को मेरा प्रणाम है।

सर्वप्रथम ब्रह्मारूप, मध्य में विष्णु और अंत में सदाशिव स्वरूप, इन तीनों स्वरूपों को धारण करने वाले आप दत्तात्रेय जी को मेरा प्रणाम है।

हाँ बाबा, हाँ! इन्हीं भगवान् दत्तात्रेय जी के ही तो आप साक्षात् अवतार हैं और आप ही तो **“ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या”** का बोध करा कर समस्त प्राणियों में एक ही ब्रह्म की व्याप्ति की अनुभूति कराते हैं।

- श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय १



हे सद्गुरु साईं! आप मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए!

हे शिर्डीश्वर! श्री साईं सत्चरित्र के अध्याय २३ में तीन प्रकार के भक्तों का उल्लेख किया गया है :- १. उत्तम, २. मध्यम और ३. साधारण।

प्रथम श्रेणी के भक्त वे हैं, जो अपने गुरु की इच्छा पहले से ही जान कर उसे अपना कर्तव्य मान कर सेवा करते हैं। द्वितीय श्रेणी के भक्त वे हैं, जो गुरु की आज्ञा मिलते ही उसका तुरन्त पालन करते हैं। तृतीय श्रेणी के भक्त वे हैं, जो गुरु की आज्ञा सदैव टालते हुए पग-पग पर त्रुटि किया करते हैं।

हे साईं! जैसे कोई परीक्षार्थी परीक्षा फल घोषित हो जाने पर अपना अनुक्रमांक (Roll Number) समाचार पत्र में खोजता है, ठीक वैसे ही मैंने भी स्वयं को उपरोक्त तीनों श्रेणियों में तलाशना प्रारम्भ किया। अनेक प्रयत्न करने पर भी मैंने पाया कि प्रथम दो श्रेणियों में तो मैं स्थान पाने में सर्वथा विफल रहा, मगर तृतीय श्रेणी में मुझे अपनी धुँधली सी झलक अवश्य दिखलाई पड़ी। सार यही था कि अपने योग्य गुरुजनों की अपेक्षाओं के अनुरूप शिष्य बनने में मैं असफल रह गया और श्री साईं सत्चरित्र का



मेरे द्वारा किया गया इतने वर्षों का पारायण सार्थक न हो सका।

हे बाबा! मैं अपनी इस असफलता का कारण जानता हूँ। मैंने आपके भक्त श्री काकासाहेब दीक्षित को आपसे यह कहते सुना था - “हे देवा! आपकी आज्ञा ही हमारे लिए सब कुछ है, हमें अन्य आदेशों से क्या! हम तो केवल आपका ही सदैव स्मरण तथा ध्यान करते हैं और दिन-रात आपकी आज्ञा का ही पालन किया करते हैं। हमें यह विचार करने की आवश्यकता नहीं कि बकरे को मारना उचित है या अनुचित? और न हम इसका कारण ही जानना चाहते हैं। हमारा कर्तव्य और धर्म तो निःसंकोच होकर गुरु की आज्ञा का पूर्णतः पालन करने में है।”

- श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय २३

हे साईं! श्री काकासाहेब दीक्षित के अनमोल वचनों को सुन कर भी मैं बहरा ही बना रहा। यही गुरु-भक्ति परीक्षा में मेरी असफलता का कारण बना।

हे द्वारकामाईधीश! संगमनेर से आई खाशाबा



देशमुख की माँ श्रीमती राधाबाई को मस्जिद में बिठा कर जो मधुर उपदेश आपने दिया था, उसे भी मैंने कान खोल कर कब सुना? (श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय १८-१९) आप माँ राधाबाई को बतला रहे थे - “मेरे एक गुरु जो बड़े सिद्ध पुरुष थे, मुझ पर बड़े दयालु थे। दीर्घ काल तक मैं उनकी सेवा करता रहा... मैंने बारह वर्ष उनके श्री चरणों की सेवा में ही व्यतीत किए।”

हे सर्वशक्तिमान साईं! स्वयं भगवान् खंडोबा ने



अपने श्रीमुख से आपके उपरोक्त कथन का सत्यापन किया था। हुआ यों था - एक बार की बात है कि शिर्डी में गुरुस्थान के समीप कुछ लोग एकत्रित थे, तभी उनमें से एक भक्त को भगवान् खंडोबा का संचार हुआ। लोगों ने शंका-निवारणार्थ उनसे प्रश्न किया कि “हे देव! कृपया बतलाइए कि ये (हे साईं ‘ये’ से तात्पर्य आपसे ही था।) किस भाग्यशाली पिता की संतान हैं और इनका कहाँ से आगमन हुआ है?” भगवान् खंडोबा ने एक कुदाली मँगवाई और एक निर्दिष्ट स्थान पर खोदने का संकेत किया। जब वह स्थान पूर्ण रूप से खोदा गया तो वहाँ एक पत्थर के नीचे ईंटें पाई गईं। पत्थर को हटाते ही एक द्वार दीखा, जहाँ चार दीप जल रहे थे। उस दरवाज़े का मार्ग एक गुफा में जाता था, जहाँ गौमुखी आकार की इमारत, लकड़ी के तख्ते, मालाएँ आदि दिखाई पड़ीं। भगवान् खंडोबा कहने लगे कि “इस युवक ने (हे साईं! आपने) इस स्थान पर बारह वर्ष तपस्या की है।” हे साईं! भगवान् खंडोबा से यह सुन कर लोग आपसे प्रश्न करने लगे। परन्तु, आपने यह कह कर बात टाल दी कि यह मेरे श्री गुरुदेव की पवित्र भूमि है। अतएव मेरा पूज्य स्थान है।

- श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय ४

हे साईं! श्री साईं सत्चरित्र का पारायण करते समय मैंने आपके द्वारा माँ राधाबाई को सुनाई गई आपकी आत्मकथा को सुन कर भी अनसुना कर दिया और भगवान् खंडोबा द्वारा किए गए रहस्योद्घाटन को भी मैंने ध्यानमग्न होकर कब सुना? तब मैं वास्तविक गुरु-भक्ति महत्ता के ज्ञान से कैसे परिचित हो सकता था! ऐसी परिस्थिति में, क्या मेरे लिए यह दावा करना कि मैं विगत ३८ वर्षों से श्री साईं सत्चरित्र का पारायण करता आया हूँ, युक्तिसंगत होगा!



हे शिर्डीश्वर! आपका यह कथन कि “मैंने बारह वर्ष अपने गुरु के श्रीचरणों की सेवा में व्यतीत किए”, मेरे मस्तिष्क में बारम्बार प्रतिध्वनित हो रहा है। मुझे लग रहा है कि आप मुझसे प्रश्न कर रहे हैं कि क्या मैंने भी कभी ‘गुरु-पाद-सेवन-भक्ति’ का अभ्यास किया है, जैसा भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने किया था? नवधा भक्ति की इस शाखा का रसास्वादन करने से मैं सर्वथा वंचित ही रह गया और मेरा पारायण अधूरा एवं अर्थहीन हो गया।

हाँ बाबा! आज मेरी आँखों के सामने श्री साईं

सत्चरित्र में वर्णित बरसों पुरानी वह घटना सजीव हो उठी है जब आपके गुरु ने आपकी परीक्षा लेने हेतु आपको एक कुएँ में चार-पाँच घंटों के लिए उल्टा लटका दिया था। ऐसी कष्टकारक परीक्षा देते हुए भी आप परम आनंद का अनुभव कर रहे थे। सचमुच ही आपने अपने भक्तों के समक्ष एक आदर्श गुरु-भक्त होने का अनुकरणीय आचरण प्रस्तुत किया। - श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय ३२

हे सद्गुरु साईं! मैं आपकी 'पादसेवन' भक्ति करता हूँ।

हे साईं! तैत्तिरीय उपनिषद् के वही शब्द पुनः मेरे मन में खनखनाने लगे हैं -

“हमें माता, पिता तथा गुरु का आदर सहित पूजन कर धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए।”

हे बाबा! अब मैं मातृ-पितृ 'भक्ति-स्मरण' यात्रा पर निकलता हूँ। हाँ साईं, मेरा अनुरोध स्वीकार आज आप मेरी लेखनी पर दक्षिणाभिमुख विराजमान हैं। अतः मेरे लिए आपकी उपस्थिति में कुछ भी असत्य कहना ब्रह्महत्या का महान पाप अर्जित करने के समान होगा। सत्य यही है कि मैं अपने माता-पिता का एक अत्यन्त अवज्ञाकारी एवं अनर्ह (अयोग्य) पुत्र रहा हूँ। इस कथन के अतिरिक्त स्वयं के बारे में अन्य कुछ भी कहने का साहस न जुटा पाने



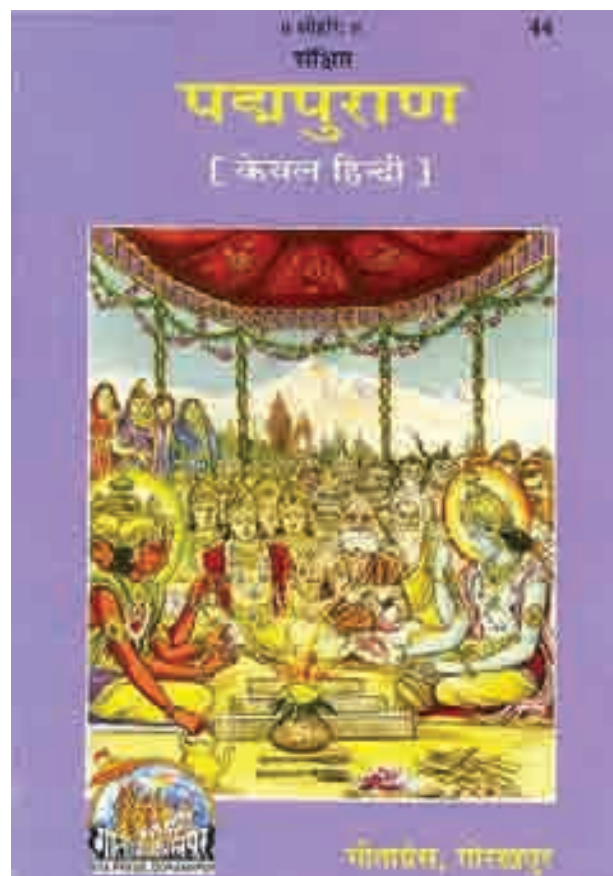
के कारण मैं अपने चरित्र व व्यवहार का शेष मूल्यांकन आपके विवेकशील एवं प्रज्ञावान भक्तों की स्वैच्छिक धारणा, व्याख्या एवं विवेचना पर छोड़ता हूँ।

हे साईं! मेरी उपरोक्त अप्रत्याशित स्वीकारोक्ति से कहीं आप व्याकुल तो नहीं हो उठे हैं। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसे आप सुन तो रहे हैं ना! हाँ बाबा! मेरे माता-पिता अपनी प्रथम पावन शिर्डी यात्रा कर प्रथमतः देहरादून ही पधारे थे। महर्षि वेदव्यास द्वारा संस्कृत भाषा में रचित १८ पुराणों में से एक पद्मपुराण है, जिसे ग्रन्थ कहा जाता है। इस ग्रन्थ के सृष्टि खण्ड (४७/११) में कहा गया है -

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्॥

मातरं पितरंश्चैव यस्तु कुर्यात् प्रदक्षिणाम।



प्रदक्षिणीकृत तेन सप्तदीपा वसुन्धरा॥

अर्थात् : माता सर्वतीर्थमयी है और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप है। इसलिए सब प्रकार से माता-पिता का पूजन करना चाहिए। माता-पिता की परिक्रमा करने से पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है।

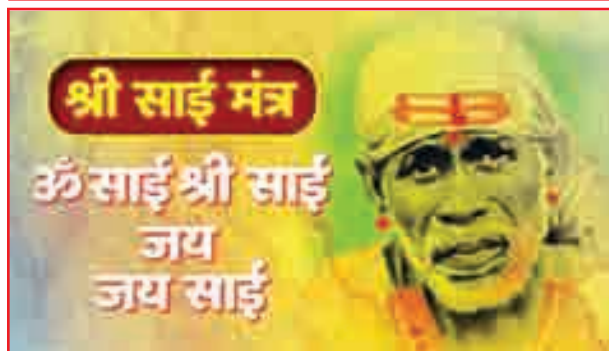
स्वयं देहरादून पधार कर अपनी शिर्डी यात्रा से प्राप्त अमोघ फल का मुझे भी रसास्वादन कराने वाले अपने माता-पिता का मैं कृतज्ञ पुत्र सुबोध शुद्ध अन्तःकरण से उनकी प्रदक्षिणा करता हूँ -

माता-पिता के चरणों में,
सारा ब्रह्माण्ड समाया है।
जिनकी ही कृपा से तो मैंने,
अपना यह जीवन पाया है।
उन माता-पिता ने ही मुझको,
जन्मा है पोसा-पाला है।
बने सुखों का वृक्ष सदा,
पर खुद ने सुख न पाया है।

जैसे वेदाचार्य महामुनि वैशम्पायन ने अपने भांजे याज्ञवल्क्य को और संत निवृत्तिनाथ ने अपने छोटे भाई ज्ञानेश्वर को क्रमशः अपने-अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया था, ठीक उसी प्रकार मेरे पिता ने मुझे अपना शिष्य अंगीकार कर शिर्डी की राह दिखाई।



हे साई! याज्ञवल्क्य का नाम श्रुतियों और स्मृतियों दोनों में प्रतिष्ठित है और ज्ञानेश्वर मात्र १५ वर्ष की उम्र में ही कृष्ण-भक्त और योगी बन चुके थे। हाँ बाबा! मैं अपने पिता से 'ॐ साई, श्री साई, जय जय साई' का श्री साईमहामंत्र प्राप्त कर आपके श्रीचरणों में स्थाई रूप से स्थान पाकर धन्य हो गया। मैं ऐसे साक्षात् दिव्य गुरुमूर्ति स्वरूप पिता के पावन चरणों में साष्टांग प्रणाम करता हूँ -



पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥
पितरौ यस्य तृप्यन्ति सेवया च गुणेन च।
तस्य भागीरथीस्नान महान्यहनि वर्तते॥

अर्थात् : पिता धर्म है, पिता स्वर्ग है और पिता ही सबसे श्रेष्ठ तप है। पिता के प्रसन्न हो जाने पर सम्पूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते हैं। जिसकी सेवा और सद्गुणों से पिता-माता संतुष्ट रहते हैं, उस पुत्र को प्रतिदिन गंगा-स्नान का पुण्य मिलता है।

बिना कारण अपने भक्तों पर स्नेह रखने वाले दया के सागर हे मेरे साई! मेरे माता-पिता ने आपके श्रीचरणों को अपना आधार-स्तम्भ मान कर उन्हें जीवन पर्यंत दृढ़ता पूर्वक पकड़े रखा। जिस प्रकार दासगणु महाराज ने अपने मधुर एवं सुंदर प्राकृतिक कीर्तन द्वारा आपको



घर-घर पहुँचा दिया, ठीक उसी प्रकार मेरे पिता के व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा आपकी कीर्ति देश के व्यापक क्षेत्र में फैल गई। यदि मेरे पिता श्री दादासाहेब खापर्डे, श्री काकासाहेब दीक्षित और श्री नानासाहेब चाँदोरकर के समकालीन हुए होते, तो श्री हेमाडपंत श्री साईं सत्चरित्र में मेरे पिता का उल्लेख भी ठीक उसी प्रकार से करते जैसा कि उपरोक्त तीनों भक्तों का किया है। मेरी माता के आपके प्रति प्रेम की माधुरी का तो कहना ही क्या! उनका पवित्र प्रेम उन्हें आपके सम्मान में भजन रचने की सदैव प्रेरणा देता रहता था। उनके भजनों में वास्तविक काव्य की झलक थी। उनके द्वारा रचित भजन सच्चे प्रेम का प्रकट स्वरूप ही थे, जिनमें भक्तगण यथार्थ दर्शन या रसिकता का अनुभव करते थे।

निर्गुण होकर भी भक्तों के प्रेमवश ही स्वेच्छा पूर्वक मानव शरीर धारण करने वाले हे मेरे साईं! आज मैं यह सोच कर अत्यन्त व्याकुल एवं व्यथित हो जाता हूँ कि अपनी बाल्यावस्था में अपने माता-पिता के जिन कंधों पर झूल कर मैंने अपने लड़कपन का आनंद उठाया, उन्हीं माता-पिता की वृद्धावस्था में मेरे कंधे उनके काम न आ सके। हुआ यों था - पिता जी वर्ष २०१० में गम्भीर रूप से बीमार हो गए; उससे पहले २५ वर्षों तक उनकी जिह्वा से प्रतिक्षण आप ही का नाम ध्वनित होता रहता था और उनके पग अविरल रूप से शिर्डी यात्रा की ओर बढ़ते रहते थे। मेरी माता को साथ लेकर वे लगभग दो-तीन माह के अंतराल से शिर्डी जाते रहते थे। स्वास्थ्य अत्यन्त बिगड़ जाने पर वे मुझसे कहते रहे कि “बेटे! मृत्यु से पहले मेरी इच्छा एक बार शिर्डी जाकर साईं के चरणों में मस्तक धरने की है।” ऐसी परिस्थिति में यदि मैं पौराणिक श्रवण कुमार बन कर अपने माता-पिता को बहँगी में बिठा कर और उन्हें शिर्डी लाकर आपके दर्शन करा पाने में स्वयं को अक्षम भी पा रहा था, तो भी मेरा यह कर्तव्य था कि हे बाबा! मैं बारम्बार आपके श्रीचरणों में गिर कर आपसे



असम्भव को सम्भव कर देने के लिए प्रार्थना करता। मगर मैंने ऐसा भी तो नहीं किया। मैं पुत्र-धर्म पालन करने में चूक गया। मेरे कंधे अनुपयोगी बन कर रह गए। मेरा श्री साईं सत्चरित्र का पारायण अर्थहीन होकर रह गया। मुझे अवज्ञाकारी एवं अनर्ह पुत्र होने का दाग लग गया।

हाँ बाबा! पिता जी के निर्वाण का समय अब निकट आ गया था और मुझे स्मरण हो आया कि अपने महानिर्वाण के पूर्व आपने श्री वझे को ‘राम-विजय’ सुनाने



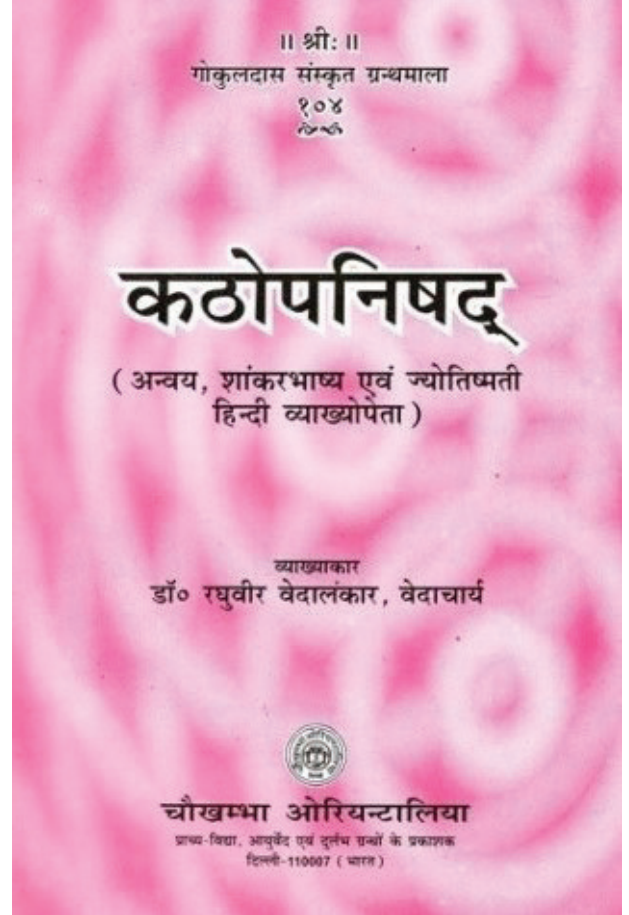
की आज्ञा दी थी। (श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय ४३-४४) अतः मैंने अपने पिता को उनके निर्वाण पूर्व श्री साईं सत्चरित्र पढ़ कर सुनाना उचित समझा और इसी अभिप्राय से एक अध्याय अनायास ही खोला। यह संयोग नहीं, वरन् आपकी दिव्य लीला ही थी कि अध्याय २८ खुल गया, जिसमें आपके भक्त मेघा के परलोकवासी होने का वर्णन किया गया है। मेरे पिता ने पोथी का पाठ सुन कर मुक्ति प्राप्त कर ली।

हे साईं! मेरे पिता के परलोक सिंधार जाने के मात्र सात वर्ष पश्चात् ही मेरी माता ने भी वर्ष २०१७ में अपनी अंतिम श्वास छोड़ दी और हे बाबा! यह मेरा दुर्भाग्य ही था कि उस समय एक सड़क दुर्घटना में घायल हो जाने के कारण मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था। मैं न तो अपनी माता के अंतिम दर्शन कर सका और न ही उनकी मृत देह को कंधा दे सका। यह मेरे कर्मों का फल था और यही था मेरा श्री साईं सत्चरित्र पारायण और आचरण?

सदैव दूसरों के कल्याणार्थ तत्पर तथा आत्मलीन रहने वाले हे मेरे साईं! कठोपनिषद् में ऐसा वर्णन किया गया है - “जब भगवान् किसी पर कृपा करते हैं तो वे उसे विवेक और वैराग्य देकर इस भवसागर से पार कर देते हैं। यह आत्मानुभूति न तो नाना प्रकार की विद्व्याओं और बुद्धि द्वारा हो सकती है और न शुष्क वेदाध्ययन द्वारा ही। इसके लिए जिस किसी को यह आत्मा वरण करती है, उसी को प्राप्त होती है तथा उसी के सम्मुख वह अपना स्वरूप प्रकट करती है”

- श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय १६-१७

हे साईं! जिन पर आप कृपा करते हैं, उन्हें प्रचण्ड शक्ति, नित्य-अनित्य में विवेक तथा ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है। - श्री साईं सत्चरित्र, अध्याय ३०



हे बाबा! श्री साईं सत्चरित्र का शुष्क अध्ययन करने वाले मुझ मूर्ख का आप वरण कीजिए और मुझे विवेक और वैराग्य देकर इस भवसागर से पार कीजिए।

- डॉ. सुबोध अग्रवाल

‘शिर्डी साईं धाम’,

२९, तिलक रोड़, देहरादून - २४८ ००१, उत्तराखण्ड.

ई-मेल : subodhagarwal27@gmail.com

संचार ध्वनि : (०)९८९७२०२८१०



The Sai Satcharita is the universal sovereign amongst books. The chapters are pleasing, clever minstrels, narrating faith, knowledge, the vedantic beauty and its vast glory. The Sai Satcharita is the market place for spirituality and each chapter therein is an emporium. The stories of the experiences are the objects fully stocked there, arranged neatly by the greatest among the poets... It is not just a book, but a wish-fulfilling tree, which the people engrossed in mundane existence find barren, but for the seekers of liberation it gives only the actual experience of liberation.



Shirdi News

* Public Relations Office *

Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

- Translated from Marathi into English by

Vishwarath Nayar

E-mail : vishwarathnayar@gmail.com



Shri Mukhtar Abbas Naqvi, former Union Cabinet Minister, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* along with his wife...



Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan, felicitating Shri Mukhtar Abbas Naqvi, former Union Cabinet Minister, along with his wife after they availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...



Shri Raghav Chadda, Member of Parliament (*Rajyasabha*), availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...



Holi was lit in front of the *Gurusthan* by the Shri Sai Baba Sansthan Trust, Shirdi. Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan and his wife, Sou. Kaveri Jadhav performed the ritual worship of *Holi* on the occasion. The Sansthan's Administrative Officers, Dr. Akash Kisave and Shri Dilip Ugale, Shri Sanjay Jori, the then Administrative Officer Incharge, Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer, Shri Ramesh Choudhary, Head of the temple department, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present on the occasion.



Shri Deepak Kesarkar, Minister of School Education and Marathi Language, Government of Maharashtra, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...



Shri Sai Baba's Chariot was taken out in a procession through Shirdi village on the occasion of *Rangpanchami* by the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. The Sansthan's Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary, priests, employees, Sai devotees and villagers were present in large numbers on the occasion.



Shri Ramdas Athavale, Union Minister of State for Social Justice and Empowerment, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*.



Shri V. Shriniwas Goud, Minister of Prohibition and Excise, Sports, Youth Service, Tourism, Cultural and Archaeology, Telangana State and Shri S. Niranjan Reddy, Co-operation and Marketing, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*.

International Women's Day Celebrated with Enthusiasm by the Sansthan...



Sou. Malti Yarlagadda, wife of Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and Principal District and Sessions Judge, Ahmednagar, presided over the International Women's Day celebrations, organized by the Sansthan, that was held in an air of enthusiasm.

Sou. Kaveri Jadhav, wife of Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan, graced this programme as the vice president that was organized on March 12, 2023 in the Shri Sai Prasadhalaya hall to mark the International Women's Day on March 8. Adv. Sou. Ranjana Gavande, Litterateur Sou. Nilima Kshatriya, Nashik President of Kalsubai Millet Farmers Producers Company (Akola) Sou. Nilima Jorwar, Sou. Chandrakala Kharade, Dr. Maithili Pitambare, Dr. Ujwala Shirsat, Principal of Shri Sai Baba English Medium School Sou. Shilpa Pujari, nurses of the hospital Sou. Manda Thorat, Sou. Najma Sayyad and Sou. Shraddha Kote and women employees of various departments of the Sansthan were present on the occasion in large numbers.

Informing about the laws about women, Adv. Sou. Ranjana Gavande, delved on the empowerment of women, citing examples of Savitribai Phule, Pandita Ramabai and Anandibai Joshi, on this occasion. Litterateur Sou. Nilima Kshatriya citing household examples in her satirical-humour style appealed to the core of the women's mind. Similarly, Sou. Nilima Jorwar, convincing about the extraordinary importance of foodgrains in our life, gave lessons to maintain good health. Also, Dr. Maithili Pitambare and Dr. Ujwala Shirsat spoke about women's health.



Shri Chandrashekhar Bawankule, State President of Bharatiya Janata Party, Maharashtra State, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* along with his family.



Shri Chandrashekhar Bawankule, State President of Bharatiya Janata Party, Maharashtra State, after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* along with his family was felicitated by Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan on behalf of the Sansthan.



Shri Biplap Kumar Dev, Member of Parliament (*Rajyasabha*) and former Chief Minister, Tripura State and BJP Haryana Incharge, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*



Shri Biplap Kumar Dev, Member of Parliament (*Rajyasabha*) and former Chief Minister, Tripura State and BJP Haryana Incharge, after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*, was felicitated by Shri Ramesh Choudhary, Head of the temple department of the Sansthan on behalf of the Sansthan.

Shri Ram Navami Festival - 2023

The public celebration of Shri Ram Navami in Shirdi was started in 1911 with the permission of Shri Sai Baba. Since then this festival is celebrated every year in Shirdi with great enthusiasm. The 112th Shri Ram Navami festival was celebrated this year from Wednesday, March 29 to Friday, March 31, 2023 in the presence of lakhs of Sai devotees and Shirdi villagers in an atmosphere of piety.

Lakhs of devotees, accompanying the palanquins from all corners of the state as also Mumbai, attended this festival. *Mandaps* (sheds) of about 11,000 sq.ft. were erected in the temple premises, marriage hall and Sainagar ground, keeping in mind that the arrangement for *darshan* of the devout be comfortable and also to protect them from the heat, considering the possible crowd during the festival. Also, *mandaps* of about 39,000 sq.ft. with bedsheets and pillows were erected for additional stay arrangements of Sai devotees in the Sai Baba Bhakta Niwas Sthan (500 rooms), Sai Dharmashala and Sainagar ground. Electricity and water supply, toilets and security arrangements were provided

in these *mandaps*. Along with this, to ensure appropriate accommodation facility for the *padayatris* (pilgrims on foot) accompanying the palanquins from Mumbai and the regions, the Sansthan having erected cloth sheds of about 1 lakh 17 thousand sq.ft. with bedsheets and pillows at the palanquin halts on the Mumbai to Shirdi highway at Khardi, Golbhan, Kasara bypass, Latifwadi, Ghoti, Sinnar, Khopadi, Pangari, Wavi, Pathare, Dushingwadi, Maldhon and Zagade Phata, provided electricity and water supply in it. Shri Valmikrao Katkade brothers of Kopargaon had given 10 free water tankers with drivers for water supply. The Sansthan provided the fuel cost and supervision arrangement for this work. After the palanquins reached Shirdi, *padayatris* were provided accommodation at Sai Dharmashala at a very nominal rate. Emergency medical facilities were provided to the *padayatris* on the route from Sinnar to Shirdi as required. A mobile medical squad was deployed for this purpose. Keeping in mind the summer period, the Sansthan erected summer cloth sheds with tarpaulin roofings in the temple premises, Shri





Sai Prasadalya and Bhakta Niwas Sthan for the convenience of the Sai devotees.

Starting the First Aid centers at Dixit Wada in front of Gurusthan, Entrance No. 2 Darshan line, Darshan line on the second floor of Shanti Niwas building, Shri Sai Baba Samadhi Mandir shatabdi mandap beside Maruti temple, Shri Sai Ashram (1000 rooms) and Shri Sai Prasadalya, an ambulance was also deployed at these places for emergency medical service. Additional buses of the Sansthan were arranged from Shri Sai Ashram, Shri Sai Baba Bhakta Niwas Sthan, Shri Sai Dharmashala and Shri Sai Prasadalya for the

devotees to come and go for the *darshan* of Shri Sai Baba. An additional 150 quintals of sugar *laddus* were prepared for easy availability of *ladoo prasad* packets to the devotees during the festival period. *Ladoo* selling centers were set up, at Shri Sainath social gathering hall, open-air auditorium in front of Dwarkamai, Sai complex beside Maruti temple, Shri Sai Prasadalya, Sevadham building, Shirdi Airport and all places of accomodation, for sale of *laddos*. Security personnel of the Sansthan's Security department, police officers and staff, rapid action team squad, bomb detection squad were deployed to maintain



proper security in the temple premises and Shirdi premises. Along with this, Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, Police Administration and Shirdi Nagar Panchayat's joint anti-encroachment and broker-preventive squads were also kept in readiness. Thus, due to the proper planning of the crowd by the Sansthan Administration, about 2 lakh Sai devotees got the benefit of the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* comfortably and easily. Sai devotees expressed their satisfaction about this.

On the first day of the festival, Wednesday, March 29, 2023, at 5.15 a.m., Shri Sai Baba's *Kakad Aarati* was held. After the *Aarati*, a procession was taken out from the *Samadhi* temple to Dwarkamai via *Gurusthan*, of the Shri Sai Baba's Photo and the Holy Book, Shri Sai Satcharita, amidst the loud sounding of the cymbals, *mridungs* and other musical instruments. In this procession, the Member of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and District Collector Shri Siddharam Salimath with the Holy Book, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav with the *Veena*, Administrative Officer Dr. Akash Kiswe and Shri Sanjay Jori, Administrative

Officer Incharge with the Photo of Shri Sai Baba, participated. The Chief Accounts Officer of the Sansthan Smt. Mangala Varade, Sou. Minakshi Salimath, Sou. Kaveri Jadhav, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary, temple priests, Sai devotees and villagers were present on the occasion. After the procession reached Dwarkamai, conducting the worship of the Holy Book, *Veena* and the Photo of Shri Sai, the *Aarati* "Shirdi *maze* Pandharpur" was done. After that the Member of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and District Collector Shri Siddharam Salimath reading the first chapter inaugurated the *Akhand Parayan* (non-stop reading) of the Holy Book Shri Sai Satcharita. After that, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav read the second chapter, Chief Accounts Officer Smt. Mangala Varade the third chapter, Administrative Officer Shri Dilip Ugale the fourth chapter and the Superintendent Incharge of the General administration department Shri Rajtilak Bagwe the fifth chapter. Doing the Holy Bath of Shri Sai Baba at 6.20 a.m., the *Aarati* "Shirdi *maze*



On the first day of the festival, Wednesday, March 29, 2023

Pandharpur” was done. The Member of the Ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector Shri Siddharam Salimath and his wife Sou. Minakshi Salimath performed the ritual *Padyapooja* (worship of the Holy Feet) of Shri Sai Baba. The then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav and Sou. Kaveri Jadhav, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi and Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary were present on the occasion. After that at 7.30 a.m. *Abhishek* worship was done by the priests on the *Samadhi* of Shri Sai Baba for the welfare of the devotees.

The midday *Aarati* was done at 12.30 p.m. *H.B.P. (Hari Bhakta Parayan)* Shri Vikram Nandedkar's *kirtan* was held at 4 p.m. on the stage beside the *Samadhi Mandir*. *Dhoop Aarati* was done at 6.30 p.m. after the *kirtan*. After that, the '*Bhajan Sandhya*' programme of Shri Alok Mishra of Delhi was held on the stage in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir shatabdi mandap* from 7.15 p.m. to 9.30 p.m. Artists participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. The procession of Shri Sai Baba's *Palkhi* was taken out through the village at 9.15 p.m. Along with the cymbal

troupes, *lezim* squads, band and drum squads, officers of the Sansthan, employees, Sai devotees and Shirdi villagers participated in this procession in large numbers. After that, *Shej Aarati* was done at 10 p.m.

Dwarkamai was kept open throughout the night for the *Akhand Parayan* of Shri Sai Satcharita.

On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023, Shri Sai Baba's *Kakad Aarati* was held at 5.15 a.m. After the *Aarati*, the *Akhand Parayan* concluded. The procession of Shri Sai Satcharita was taken out from Dwarkamai via *Gurusthan* to the *Samadhi Mandir* with the loud sounding of the cymbals and *mridangs*. Chairman of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlagadda with the Holy Book, Member of the Ad-hoc Committee and District Collector Shri Siddharam Salimath with the *Veena*, Shri Sai Baba Hospital's Medical Director Lt. Colonel Dr. Shailesh Oak and Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi carrying the Photo of Shri Sai Baba had participated in the procession. On this occasion, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav,



On the first day of the festival, Wednesday, March 29, 2023



On the first day of the festival, Wednesday, March 29, 2023

Sou. Malti Yarlagadda, Sou. Minakshi Salimath, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary, temple priests, Sai devotees and villagers attended in large numbers. At 6.30 a.m. the Chairman of the Ad-hoc Committee and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlagadda and his wife Sou. Malti Yarlagadda, Member of the Ad-hoc Committee and District Collector Shri Siddharam Salimath and his wife Sou. Minakshi Salimath and the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav performed the worship of the *Kawadis*. At 8 a.m., the Chairman of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlagadda and his wife Sou. Malti Yarlagadda performed the *Padyapooja* of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir*, worship of the Flag of the Shri Sai Baba *Samadhi shatabdi* (centenary) flag-post at Lendi Baug and worship of the sack of wheat in Dwarkamai. Maharashtra State School Education Minister Shri Deepak Kesarkar, Member of the Ad-hoc Committee and District Collector Shri Siddharam Salimath and his wife Sou. Minakshi Salimath, Administrative

Officer Shri Dilip Ugale, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary were present on the occasion.

At 10 a.m. on the stage on the north side of the *Samadhi* temple, H.B.P. Shri Vikram Nandedkar performed the *kirtan* on the birth of Shri Ram. After the *kirtan*, the festival of Shri Ram's birth was celebrated by the Chairman of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlagadda and his wife Sou. Malti Yarlagadda and the Sansthan's then Chief Executive Officer Incharge Shri Rahul Jadhav and his wife Sou. Kaveri Jadhav. On this occasion, the Minister of School Education of Maharashtra State Shri Deepak Kesarkar, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary, temple priests, Sai devotees and villagers were present in large numbers.

At 12.30 p.m. Shri Sai Baba's midday *Aarati* was held. Before the mid-day *Aarati*, on behalf of the Rasane family and Deshpande (Nimonkar) family, ritually worshipping the new Flags, the procession of the Flags was taken out at 4 p.m. And, in the evening at 5 o'clock



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023

Shri Sai Baba's Chariot was taken out in the procession through the Shirdi village with the sound of musical instruments.

A large number of Sansthan officers,

employees, Sai devotees and Shirdi villagers participated in this Chariot procession along with the cymbal troupes, *lezim* squads, band and drum groups. At 5.30 p.m. the *Sandal*



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023

procession was taken out from the Abdul Baba's hut. The procession reached Dwarkamai through the *Palkhi* route. Placing the *Sandal* at Shri's Dwarkamai, as per tradition the *Fatyas*

were done. After that, applying sandalwood paste on Shri Sai Baba's *Samadhi* and doing the *Fatyas*, red and green coloured clothe was offered on the *Samadhi*. In this manner,



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023

the *Sandal* procession concluded. As per the tradition, Muslim devotees, Sai devotees and temple staff were present on this occasion. After the procession returned in the evening,

Dhoop Aarati took place at 6.30 p.m. From 7.15 p.m. to 9.15 p.m., *Bhajan Sandhya* programme of Shri Mangesh Amdurkar, Sai Musical Group (Wardha) was held on the stage of Shri Sai



On the main day of the festival, Thursday, March 30, 2023

Baba *Samadhi Mandir shatabdi mandap*. The audience responded enthusiastically to this programme. Artists participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. At 9.15 p.m. the routine *Palkhi* procession of Shri Sai Baba on Thursday was taken out. Officers and employees of the Sansthan, Sai devotees and villagers of Shirdi participated in this procession in large numbers. Being the main day of the festival, the *Samadhi Mandir* was kept open throughout the night. From 10 p.m. to 5 a.m. the next day, interested artists presented their programmes in front of Shri Sai Baba.

On the concluding day of the festival on Friday, March 31, 2023 the Holy Bath of Shri Sai Baba was done at 5.05 a.m. and the *Aarati* "Shirdi maze Pandharpur" was done. *Rudra Abhishek* worship was done at *Gurusthan* by the Member of the Ad-hoc Committee and District Collector Shri Siddharam Salimath and his wife Sou. Minakshi Salimath. The Sansthan's then Chief Executive Officer Incharge Shri Rahul Jadhav and his wife Sou. Kaveri Jadhav performed the *Padyapooja* of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir*. The Head of the temple

department Shri Ramesh Choudhary and temple priests were present on the occasion. After the *Gopalkala kirtan* by H.B.P. Shri Vikram Nandedkar at 10 a.m., the *Dahihandi* (pot of curd) was broken in the Shri Sai Baba





Samadhi Mandir. The then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav, Chief Accounts Officer Smt. Mangala Varade, Administrative Officer Dr. Akash Kisave, Accounts Officer Shri Kailas Kharade, Deputy Executive Engineer Shri B.D. Dabhade, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of the temple department Shri Ramesh Choudhary, temple priests, employees, Sai devotees and villagers were present on the occasion in large numbers. H.B.P. Shri Vikram Nandedkar was felicitated on behalf of the Sansthan by the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav. After that the midday *Aarati* of Shri Sai Baba was done at 12.10 p.m. Shri Sai Baba's *Dhoop Aarati* was done at 6.30 p.m. From 7.15 p.m. to 9.30 p.m., the Classical Dance Medley and *Bhajan Sandhya* programme of Smt. Sunita Kothari (Tirupati) was held on the stage of Shri Sai Baba *Samadhi Mandir shatabdi mandap*. The audience responded enthusiastically to this programme. Artists participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. The *Shej Aarati* of Shri Sai Baba was done at 10 p.m.

The decision to distribute free *bundi* packets as *prasad* along with *udi*, as earlier, was taken at the Ad-hoc Committee meeting of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi on March 22, 2023. Accordingly, on the auspicious occasion of the main day of the Ram Navami festival, the inaugural distribution of *bundi prasad* packets as earlier to every Sai devotee in the *darshan* line was done by the Chairman of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlagadda and his wife Sou. Malti Yarlagadda. Member of the Ad-hoc Committee



of the Sansthan and District Collector Shri Siddharam Salimath, Sou. Meenakshi Salimath, Administrative Officer Shri Dilip Ugale, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of the temple department Shri Ramesh Chaudhary and staff were present on the occasion. On the main day of the festival, Maharashtra State School Education Minister Shri Deepak Kesarkar availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* and participated in various religious programmes.

1,85,413 Sai devotees availed the *prasad*-meal at Shri Sai Prasadalya during the Shri Ram Navami festival. Sai devotees availed 32,530 food packets as snacks, 32,500 *ladoo* packets of 3 *laddos* each and 3,39,590 *ladoo* packets of 1 *ladoo* each. 1,16,000 free *boondi-prasad* packets were distributed to Sai devotees in the *darshan* line. During the festival, accomodation facility for 49,424 Sai devotees was provided at Sai Ashram Bhakta Niwas, Dwaravati Bhakta Niwas, Sai Dharmashala, Shri Sai Baba Bhakta Niwas Sthan (500 rooms), Sai Prasad



Niwas and additional accommodation facilities. Accommodation at nominal rates was provided at Shri Sai Dharmashala to about 11,000 *padayatris* accompanying the 50 *palkhis* that arrived from the nook and corner of the state

including Mumbai for the festival.

Under the guidance of the Chairman of the Ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge Shri Sudhakar Yarlgaada, Member of the Ad-





hoc Committee of the Sansthan and District Collector Shri Siddharam Salimath and the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan Shri Rahul Jadhav, Chief Accounts Officer Smt. Mangala Varade, Administrative Officers Dr. Akash Kisave, Shri Dilip Ugale and Administrative Officer Incharge Shri Sanjay Jori, Deputy Executive Engineer Shri B.D. Dabhade, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of all departments and all staff took special efforts for the successful conduct of the Shri Ram Navami festival.

Speciality of the festival period :-

* The grand display of Shri Ram at the

entrance gate of the temple and the Sai *Palkhi* procession in Lendi Baug for the Shri Ram Navami festival by the Dwarkamai *Mandal*, Mumbai and the Shiv *Bhola Bhandari*...Sai *Bhola Bhandari* spectacular display at the Shri Sai Prasadalya and the electrical lighting in the temple and its premises were the main attractions of this festival.

* The attractive floral decoration of the *Samadhi Mandir* and the premises from the donation of Smt. Shobha Pai, philanthropic Sai devotee of America drew the attention of Sai devotees.



Maharashtra Day - Labour Day

Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan, Shirdi hoisted the flag at 7.10 a.m. and felicitated the Ideal Employees and retired employees on the occasion of Maharashtra day and Labour Day on May 1, 2023.

Smt. Mangala Varade, Chief Accounts Officer, Administrative Officers Dr. Akash Kisave and Shri Dilip Ugale, Deputy Executive Engineer Shri Bhikan Dabhade, Administrative Officer Incharge Shri Sanjay Jori, Dr. Shailesh Oak, Medical Director, Head of all departments, employees, teaching faculty of the Educational Complex and students were present on this occasion.

Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan gave Maharashtra Day and Labour Day greetings to the officers and employees of the Sansthan on this occasion. Speaking on the occasion, he stated that, "598 employees will soon get pleasant news. I am thinking of externing the word 'contractual' in the Sansthan. Just as we rightfully and authoritatively get angry at our employees, take action on them, it is my responsibility as the head of the family to do good for the employees as our duty, with the same right and authority. And on that count I am available to every employee. Even the very last employee can come to me and voice his problem. As long as I am at Baba's door, till then I will fulfill my duty towards your welfare." He lauded the work of the employees of various departments. Shri Vishnu Thorat, Head of the Shri Sai Prasadlaya department, was felicitated as the Best Head of department for having successfully planned the *prasad*-meals of Sai devotees during the crowded period of Maharashtra State *Pashudhan* (Animal Wealth) *Maha*-expo and the Ram Navami festival - 2023, to 1,10,000 Sai devotees in one day without a single complaint.

Shri Ramakant Pawar, welder of the Sansthan's Mechanical department, Shri Pratap Gudghe, helper of *Ladoo-prasad* Making department, Shri Samadhan Kahandal, skilled contract employee of Public Relations department, Shri Sanjay Jagtap, contract vehicle driver of Transport department, Shri Mangalsingh Rajput, contract employee of Health department, Shri Rajaram Kalekar, helper of Store department, Shri Ramnath Choudhary, group instructor of ITI department, Shri Bhagwan Popalghat, helper of Construction department, Shri Kishor Varule, contract employee of Canteen department, Shri Vijaykumar Deshmukh, assistant teacher of Kanya Vidya Mandir, Shri Nanasaheb Shelke, helper of Garden department, Shri Avinash Gondkar, helper of Sai Baba Bhakta Niwas Sthan, Shri Prashant Kulkarni, skilled contract employee of Property department, Shri Ganesh Tak, clerk of Sai Dharmashala department, Shri Dharma Ugale, Sansthan contract employee of Temple department,

Shri Devanand Shejwal, helper of Water Supply department, Shri Madhukar Vani, Sansthan contract employee of CCTV department, Shri Shivnath Vani, contract security guard of Security department, Shri Tanaji Chavan, Sansthan contract employee, Shri Sanjay Dange, helper/watchman, Smt. Shalu Shejwal, contract female security guard, Smt. Kalpana Vani, contract female security guard, Shri Pandurang Kawade, incharge senior accountant of Accounts branch, Shri Ramdas Nanekar, wireman of Electrical department, Shri Kailas Shirole, unskilled contract employee of Purchase department, Dr. Kunal Dale, RMO of Sainath Hospital, Shri Shailesh Jagtap, laboratory technician, Shri Sunil Bansode, helper, Shri Bapusaheb Bagal, telephone operator of Broadcasting department, Shri Paraji Kasar, helper of Sainath Hospital, Shri Sunil Sadaphal, contract male nurse, Shri Ganesh Janerao, contract employee of Publications department, Shri Dnyaneshwar Gaikwad, clerk of General Administration department, Shri Vasant Shirole, skilled contract employee, Shri Balasaheb Gondkar, peon of Accounts department, Smt. Shashikala Dange, helper of Shri Sai Prasadlaya department, Shri Madhukar Dokhe, helper, Shri Rajendra Jadhav, helper and Smt. Dipali Kulkarni, helper, these 39 employees were felicitated as Ideal Employees on behalf of the Sansthan with a certificate, idol of Shri Sai Baba, shawl and a coconut by Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan, Smt. Mangala Varade, Chief Accounts Officer, Dr. Akash Kisave and Shri Dilip Ugale, Administrative Officers, Deputy Executive Engineer Shri Bhikan Dabhade, Administrative Officer Incharge Shri Sanjay Jori, Col. Dr. Shailesh Oak, Medical Director. After that, female students selected for police recruitment from the sports quota from the Educational Complex, Kumari Vaishnavi Vani, Kumari Ankita Solse and Kumari Trupti Bhalerao were felicitated by Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan. 21 successful students at the state level competitions of Shri Sai Baba College under the guidance of Shri Vikas Shivgaje, Shri Babar and Shri Bodhak were felicitated by the Officers/Head of departments of the Sansthan.

Shri Rahul Jadhav, the then Chief Executive Officer Incharge of the Sansthan felicitated employees of the Sansthan who completed the prescribed 60 years of age in April 2023 and retired. These included Shri Vikram Jadhav of Sainath Hospital, Shri Sampat Dange of Store department and Shri Asaram Khotkar of Health department.

Shri Vasant Vani, teacher of Shri Sai Baba Kanya Vidyamandir and Shri Rajendra Kohakade of English Medium School were the comperes for this programme.



At the Sansthan's Mumbai Office on the day of Ram Navami
(Thursday, March 30, 2023)

Monday, May 1, 2023
Workers' Day - Maharashtra Day



Monday, May 1, 2023
Workers' Day - Maharashtra Day



श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. प्रिंट्रेड इश्युज (इं) प्रा. लि., १७, प्रगति इंडस्ट्रियल इस्टेट, ३१६, एन.एम. जोशी मार्ग, मुम्बई - ४०० ०११ में मुद्रित और साई निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। * सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी